आंध्रप्रदेश

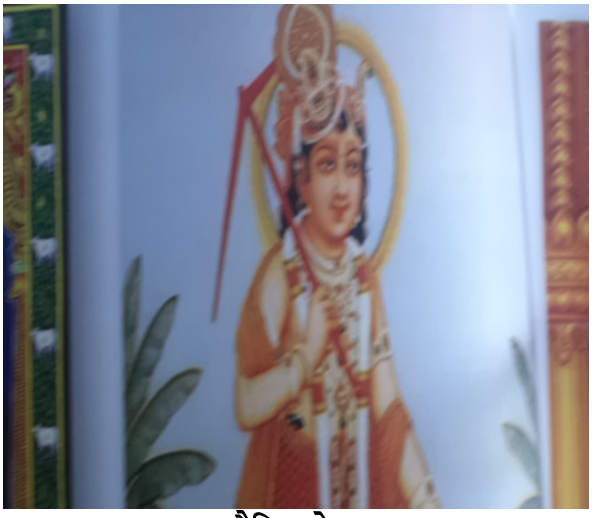

जैविक देश

क्यूबा विश्व में 100 प्रतिशत जैविक देश है.

प्रथम

आस्ट्रेलिया 10,500,000 हेक्टेयर में जैविक खेती कर विश्व में आज प्रथम है. ओस्ट्रेलिया अपनी कुल भूमि का मात्र 2.31 प्रतिशत जैविक खेती के लिए उपयोग कर रहा है.

द्वितीय

अर्जेन्टीना 3192000 हेक्टेयर में जैविक खेती करके दूसरे है. अर्जेंटीना मात्र 1.89 प्रतिशत जैविक खेती के लिए उपयोग कर रहा है.

तृतीय

इटली 1230000 हेक्टेयर में खेती करके तीसरे है. इटली 7.94 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

चौथा

अमेरिका 9,50,000 हेक्टेयर में खेती करके चौथे है. अमेरिका 0.23 प्रतिशत ही जैविक खेती के लिए उपयोग कर रहा है. अमेरिका के पास में 936 मिलियन हेक्टेयर में से 177 मिलियन हेक्टेयर उपजाउ भूमि है. अमेरिका में 90,000 केचुआ फार्म कार्यशील हैं और जापान को हजारो डालर के केचुए निर्यात किये गये हैं. अमेरिका वर्मी कल्चर का उपयोग मलमूत्र अवमल तथा कार्बनिक पदार्थों को पुनः चक्रित करने का कार्य व्यवसायिक स्तर पर किया जा रहा है.

अमेरिका में अक्तूबर 1980 से अग्निहोत्र कृषि का कार्य प्रारम्भ किया गया था. 17 एकड़ भूमि पर अग्निहोत्र कृषि का कार्य प्रारम्भ किया गया था.

सेम

सेम की फसल पर अग्निहोत्र कृषि का प्रयोग सबसे पहले किया गया था. श्रीमती जेरी होजेस के द्वारा प्रयोग करने के बाद में पाया गया कि 12 गुना 16 फुट की कुटिया में 4 घंटे अग्निहोत्र हवन करने के बाद में 1989-90 में प्रति 100 वर्गफूट भूमि पर सेम की फसल 43.75 पांउड हुई थी.

रासायनिक खाद की तुलना में वृद्धि

रासायनिक खाद की तुलना में अग्निहोत्र कृषि करने पर 961 प्रतिशत वृद्धि हुई थी. अमेरिका में अग्निहोत्र कृषि पर अनुसंधान करने के लिए हर साल बहुत ही अधिक धन खर्च किया जाता है.

अग्निहोत्र विश्वविद्यालय

अमेरिका में अग्निहोत्र पर गहन अनुसंधान करने के लिए अग्निहोत्र विश्वविद्यालय प्रारम्भ किया गया है. अमेरिका में 4 घंटे महामृत्युंजय यज्ञ हर दिन किया जाता है.

पांचवा

ब्रिटेन 479631 हेक्टेयर में खेती करके पांचवे है. ब्रिटेन 3.96 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

छठवा

उरुग्वे 678481 हेक्टेयर में खेती करके छठवे है. उरुग्वे 4 प्रतिशत जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

सातवा

जर्मनी 632165 हेक्टेयर में खेती करके सातवे है. जर्मनी 3.7 प्रतिशत जैविक के लिए उपयोग कर रहा है. जर्मनी में 2001 में जैविक खेती 2 प्रतिशत की जाती थी जो आज 7 प्रतिशत की जा रही है.

1974 से ही भारत से अग्निहोत्र को पूरी तरह से समझकर अग्निहोत्र पर बहुत ही गहराई से अनुसंधान कर विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्-ित कर चुका है.

पश्चिमी जर्मनी बोडेन्सी संभाग की फार्मास्यूटिकल्स रिसर्च इंस्टीट्यूट की प्रमुख श्रीमती मोनिका येले तथा उनके पति श्री बर्थोल्ड येले के द्वारा लगातार अनुसंधान करने के बाद में महत्वपूर्ण निर्णय लिए थे. जर्मनी ने अग्निहोत्र के लिए बहुत अधिक खर्च किया है. रासायनिक खाद एवं जहरीले कीटनाशकों के लगातार प्रयोगों के कारण स्वास्थय पर गंभीर प्रभाव के कारण ही जर्मनी बहुत अधिक परेशान था.

अग्निहोत्र की भस्म का दवा के रुप में प्रयोग भी जर्मनी ने ही विश्व को बताया था. अग्निहोत्र करने की पूरी प्रक्रिया को भी जर्मनी ने सबसे पहले पूरी तरह से समझने का प्रयत्न किया था. अग्निहोत्र की प्रदू-णरोधी क्षमता का अध्ययन कर विश्व के सामने आश्चर्यजनक परिणाम दिखाये. अग्निहोत्र की भस्म का वैज्ञानिक परीक्षण कर अग्निहोत्र भस्म के रोगप्रतिरोधक गुणों को विश्व को बताया था. सबसे पहले जर्मनी ने अग्निहोत्र के गुणों को अच्छी तरह से परखा था. अग्निहोत्र कृ-ि अग्निहोत्र की भस्म से ही की जाती है इसलिए अग्निहोत्र कृ-ि करने के लिए जर्मनी ने वैज्ञानिक आधार तैयार किया था.

आठवा

स्पेन 485079 हेक्टेयर में खेती करके आठवे है. स्पेन 1.66 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

नौवा

कनाडा 430600 हेक्टेयर में खेती करके नवें है. कनाडा 0.58 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

निर्यात

कनाडा अमेरिका को 30,000 डालर के केचुओं का निर्यात हर साल करता है.

दसवा

फ्रांस 419750 हेक्टेयर में खेती करके दसवें है. फ्रांस 1.4 प्रतिशत जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

25 प्रतिशत जैविक कृ-ि

डेनमार्क में जैविक खेती के फार्मों की संख्या 1989 में मात्र 401 थी जो 2005 में बढ़कर 9300 हो गयी है. आज कुल कृषि का 25 प्रतिशत भाग जैविक खेती के द्वारा किया जाता है.

जापान

जापान 15,000 टन जीवित केचुआ ईल मछली के संवर्धन के लिये आयात करता है. जापान 15,000 टन केचुआ कागज एवं धागा मिलों के व्यर्थ को पुनः चक्रित करने हेतु आयात करता है.

रुस

इस समय रुस के पास 1708 मिलियन में से मात्र 126 मिलियन हेक्टेयर भूमि ही उपजाउ है. बाकी बंजर या बर्फीली है.

चीन

चीन के पास 960 मिलियन हेक्टेयर में से 124 मिलियन हेक्टेयर उपजाउ है.

जैविक राज्य

आंध्रप्रदेश को 100 प्रतिशत जैविक राज्य बनाने के लिए सिक्किम की तरह ही जेविक बोर्ड की स्थापना करने के लिए विधानसभा में तुरन्त ही प्रस्ताव पारित करना होगा.

दूसरा

कुल 6959 टन दूध उत्पादित करके आंध्रप्रदेश राज्य वर्तमान में भारत में दूसरे स्थान पर है.

देशी गायों का दूध बहुत ही कम है तथा देशी गायों के दूध को बढ़ाने के लिए गंभीरता के साथ में ब्राजील के समान अंगोल पर कार्य करने की आवश्यकता है.

दूध उत्पादन में प्रथम आने के लिए गंभीरता के साथ में चिंतन कर परिवर्तन करने की आवश्यकता है.

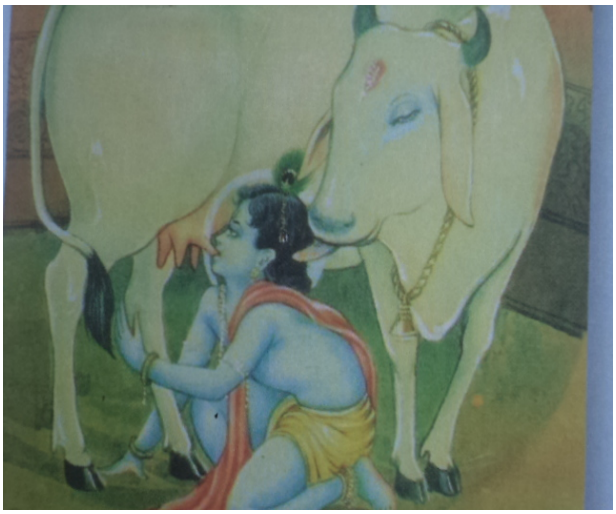

गो सेवा आयोग

गो सेवा आयोग की स्थापना कामधेनु के संपूर्ण विकास करने के लिए तुरन्त ही करनी अनिवार्य है.

कामधेनु विश्व विद्यालय

कामधेनु विश्वविद्यालय की स्थापना होने पर ही देशी गोवंश को विकसित करने के लिए आवश्यक नीति बनाना संभव है.

छतीसगढ़ राज्य में मई 2012 से कामधेनु विश्वविद्यालय कार्य कर रहा है.

provided by Dr.A.Madhusudhna Rao

अहिंसा मंत्रालय

अहिंसा मंत्रालय तुरन्त ही प्रारम्भ करना अनिवार्य है.

provided by Dr.A.Madhusudhna Rao

प्रतिबंध

रासायनिक खाद तथा जहरीले कीटनाशक की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के लिए जैविक बोर्ड का गठन अनिवार्य है.

आंध्रप्रदेश में बहुत ही कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता है.

provided by Dr.A.Madhusudhna Rao

गोवंश विरोधी सरकार को बदलकर अनुकूल नीति की आवश्यकता है.

कतलखाना

343 सरकार से लाइसेंस प्राप्त कतलखाने बंद करने के लिए जबरदस्त अभियान की भी आवश्यकता है.

विश्व में यह जागृति है कि ओजोन छेद में वृद्धि कतलखानों में जीव की चित्कार के कारण है.

डा. इब्राहिम,

कतलखाने में जीव चित्कार के कारण बहुत अधिक उर्जा 1042 मेगावाट जितनी उत्पन्न होकर ओजोन परत को नुकसान पहुंचा रही है.

1955-56 में फुटबाल जितना ओजोन छिद्र आज 280 लाख वर्ग किलोमीटर तक पहुंच गया है.

ओजोन छिद्र के बढ़ने के कारण प्रलय की संभावना बन रही है.

अलकबीर

मेढक जिले में एशिया का सबसे बड़ा अलकबीर कतलखाना अंगोल नस्ल का सबसे बड़ा दुश्मन है.

60,000 टन वार्षिक क्षमता का भैंस, भेड़, बकरी काटने का कतलखाना है.

डा. मदन मोहन बजाज, डा इब्राहिम, डा. विजयराज सिंह जैसे समर्पित वैज्ञानिकों के अनुसंधानों से यह साबित हो गया है कि धरती पर भूकंप, बाढ़, अकाल, तुफान जैसी प्राकृतिक महाविनाश का मुख्य कारण अलकबीर कतलखाना है.

अलकबीर मानव के लिए खतरे की धंटी है.

डा. विजयराज सिंह

अलकबीर जैसे अल्ट्रा मोर्डन कतलखानों में मांस के निर्यात करने के नाम पर अंगोल जैसी महत्वपूर्ण देशी नस्ल के गोवंश का सत्यानाश बहुत ही लंबे समय से किया जा रहा है.

899 टन

आंध्रप्रदेश 899 टन 11,07,000 संकर नस्ल से दूध का उत्पादन कर रहा है.

ए–1

संकर नस्ल से ए-1 दूध मिल रहा है जो मानव के स्वास्थय के लिए हानिकारक है.

संकर नस्ल को भी बढ़ावा देने के कारण ही देशी नस्ल की उपेक्षा की जा रही है.

851 टन

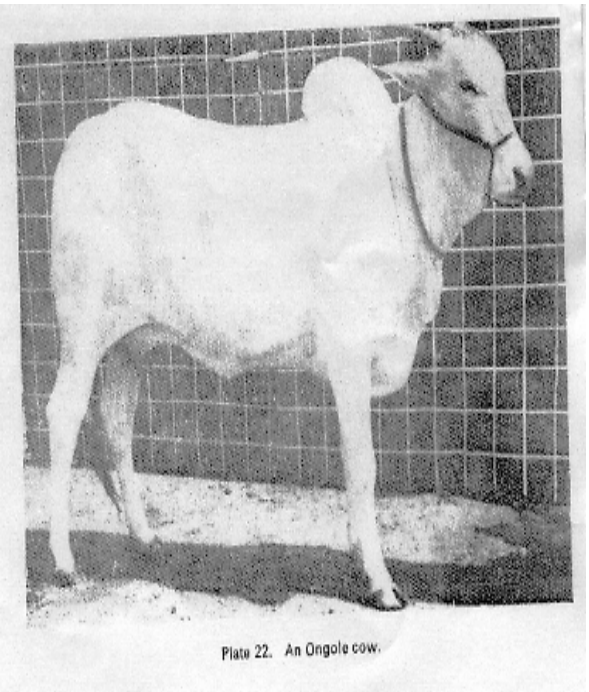

Plate 22. An Ongole cow.

देशी नस्ल की 81,93,000 गायों से मात्र 851 टन दूध का उत्पादन किया जा रहा है. नंदी के अभाव के कारण ही गायों का दूध कम हुआ है. नंदी के बदले में कृत्रिम गर्भाधान करवाने के नाम पर वर्णसंकर जानवरों का वीर्य प्रयोग करने के कारण अंगोल गायों का परिवर्तन अधिक दूध के नाम पर किया गया है.

अंगोल नस्ल से नयी नस्ल तैयार करने का कार्य पूरे विश्व में किया गया है. देशी गाय के दूध का मूल्य अच्छा मिलने के लिए मानसिक परिवर्तन करने की आवश्यकता है. हमें गोवंश में अच्छी नस्ल के बढ़िया सांढ तैयार करने पर पूरा जोर देना था.

बहुत ही डूब मरने तथा मानसिक गुलामी की बात है कि अंगोल यानी नेलोर नस्ल के गोवंश के पतन के कारण ही देशी नस्ल के दूध के उत्पादन में भारी कमी आयी है.

भैंस को बढ़ावा

5209 टन

भैंस से 5209 टन दूध उत्पादित किया जा रहा है. कतलखानों में भैंस को बहुत बड़ी मात्रा में काटा जाता है. आंध्रप्रदेश में दूध के साथ में मांस के लिए भैंस को बहुत ही अधिक बढ़ावा दिया गया है. भैंस के दूध का मूल्य बहत ही अच्छे मूल्य पर लोगों के द्वारा खरीदा जा रहा है. दूध के लिए अंगोल गायों के बदले में भेंस पाली गयी हैं.

गोबर गैस

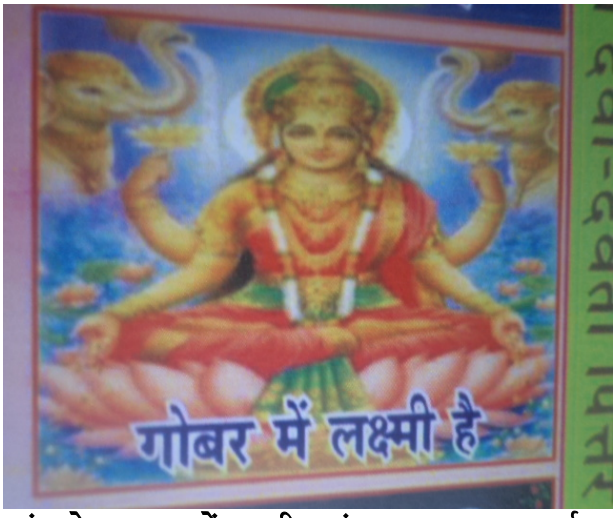

आंध्रप्रदेश राज्य में सस्ती एवं प्रदू-ाण मुक्त उर्जा प्राप्त करने के लिए आंध्रप्रदेश में मौजूद अपार गोवंश के गोबर का उपयोग करने के लिए 10,65,000 पारिवारिक गोबर गैस संयत्र लगाने का प्रावधान किया गया है.

कार्बन क्रेडिट

ओजोन में 280 लाख वर्ग किलोमीटर छेद होने के कारण विश्व में कार्बन क्रेडिट का लाभ भारत को सबसे अधिक मिल रहा है. 1000 करोड़ रुपये कार्बन क्रेडिट से भारत कमा चुका है.

आंध्रप्रदेश उर्जा उत्पादन करने के लिए काफी जागरुक है. उर्जा विकास निगम की भी नींव आंध्रप्रदेश में रखी गयी है.

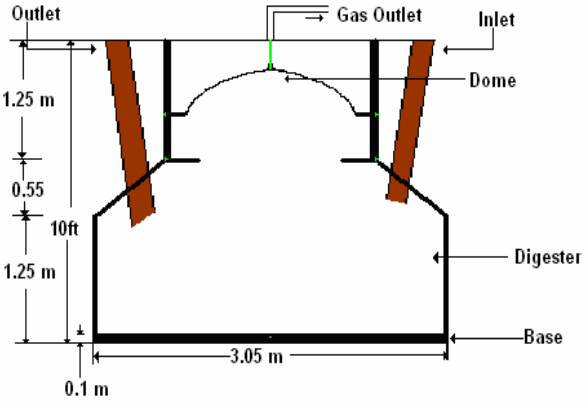

आंध्रप्रदेश में जनता में उदासीनता के कारण ही लक्ष्य से बहुत ही कम 4,00,857 पारिवारिक गोबर गेस संयंत्र लगाये गये हैं.

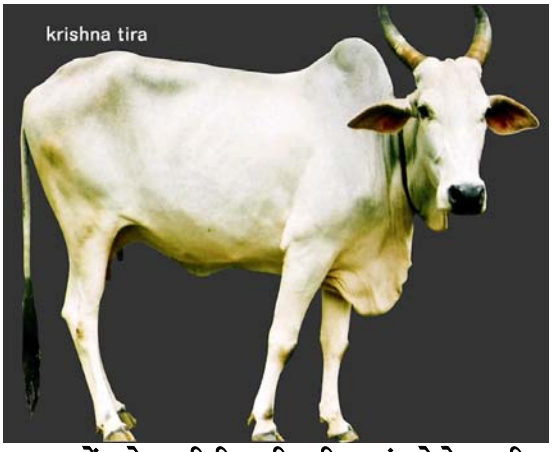

राज्य में से गरीबी, बीमारी एवं बेरोजगारी दूर करने के लिए 81,93,000 गोवंश के गोबर के उपयोग करने के लिए गंभीरता के साथ ध्यान देने के लिए राज्य में तुरन्त ही परिवर्तन करने की आवश्यक्ता है. कड़ाई से अमल करने पर ही लक्ष्य हासिल करना संभव है.

पर्यावरण की सुरक्षा करने के लिए पारिवारिक गोबर गैस संयंत्र के उपयोग करने पर ध्यान देने की आवश्यकता है. हर दिन निकल रहे कचरे से भी हमेशा के लिए मुक्ति मिलेगी.

उर्जा विकास एजेंसीज के माध्यम से गोशालाओं और पांजरापोलों में पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखकर बढ़ती हुई उर्जा की मांग को ध्यान में रखकर गोबर गैस संयंत्रों की नींव रखी गयी है. राज्य में गोबर गैस स्लरी के माध्यम से खेती में भी बढ़ोत्तरी दर्ज की गयी है.

हैदराबाद

पंचगव्य

मोबाइल 09849115851 पर विश्व की सबसे बड़ी गोशाला राजस्थान में पथमेड़ा में पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादन प्रा. लि. के द्वारा उत्पादन की जाने वाली सभी वस्तुएं उपलब्ध हैं.

आंध्रप्रदेश गौशाला फेडरेशन

आंध्रप्रदेश में वर्तमान में गोसेवा आयोग नहीं है इसलिए आंध्रप्रदेश गौशाला फेडरेशन 6109, 6 वे ब्लोक, जे.पी.महानगर, बालापुर क्रोस रोड, हैदराबाद 500097 दूरभा-ा 040-24656395 1.2 करोड़ गोवंश, 300 से ज्यादा गौशालाएं हैं का संचालन कर रही है.

श्री महेश अग्रवाल जी अध्यक्ष 9246175600 गोशालाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए देशी गोवंश की नस्ल सुधार करने के लिए संगठित होकर सक्रिय हैं.

हर माह 60 बैल किसानों को बांटने के लिए भावी योजना है. मंदिरों में गायों का दान करना है.

सरकार की नीति के अनुसार पंजीकृत गोशालाओं को धन देते हैं.

श्री एस.एन.भी. मुरली कृ-ण सचिव 9848010475 गाय खरीदने, चारा उगाने, सरकारी चिकित्सक सुविधा, दवाओं का वितरण, अधौला शैलेज, चोपकटर के लिए धन सभी को देते हैं.

के. शशीकला माधव रेडडी को-ाध्यक्ष 9912175747 5 से ज्यादा गोवंश होने पर जमीन स्वयं की या लीज पर हो तथा सोसायटी पंजीकृत होनी चाहिए ऐसी गोशालाओं का पंजीकरण कर धन दे रही हैं.

श्री एम. रोजा राजे कोडीनेटर 9394005600 आंध्रप्रदेश में गोवंश के विकास करने के लिए संगठित होकर सक्रिय हैं.

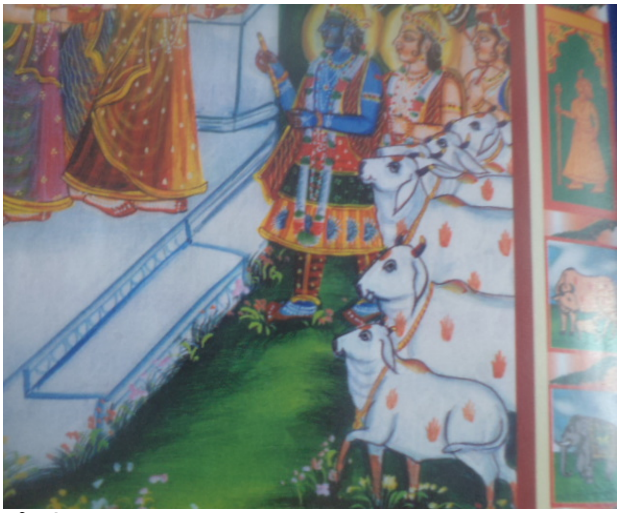

श्री विमल कुमार चाचन 9440037092 सलाहकार नंदी तैयार करने के लिए सक्रिय हैं.

वर्तमान में मात्र 56 गोशालाएं पंजीकृत हैं. पंजीकृत गौशालाओं के पास में 42,000 देशी, दोगले, विदेशी गोवंश है.

16 गोशालायें अर्क, दंतमंजन पावडर, धूप, खाद, फसलरक्षक, गोबर गैस स्लरी तैयार कर रही हैं.

सत्य शिवं सुंदरं

2001 में श्री धर्मचंद रांका के द्वारा सत्य शिवं सुंदरं गौ निवास, गगन पहाड़, एयरपोर्ट रोड, आरआर जिला हैदराबाद 501323 में स्थापित की है.

5 एकड़ जमीन श्री घनश्याम पटेल ने दी है. गोवंश के लिए वर्तमान में घांस कुटटी की आवश्यकता है.

श्री धर्मचंद जी रांका सक्रिय रुप से कार्य कर अदभुत परिवर्तन करने के लिए प्रयत्नशील हैं. श्री अभिजित संचालक 9985385399 वर्तमान में 3 एकड़ भूमि पर 4256 देशी, दोगले, विदेशी गोवंश 80 कर्मचारियों के द्वारा 3 करोड़ खर्च करवाकर सेवा करवा रहे हैं. गोबर गौमूत्र किसानों को दे देते हैं.

कुल प्राप्ति 2 करोड़ है इसलिए धन की समस्या है.

अलानसंस अर्ध एकीकृत 90,000 टन वार्षिक क्षमता का कतलखाना चला रही है. गोपनीय ढंग से गोवंश कट रहा है.

अग्निहोत्र हाउस

श्री हरिशचंद्र राव, अग्निहोत्र हाउस, 4-5-529,

बड़ी चावडी, सुलतान बाजार, हैदराबाद 040-27052812 कामधेनु के विकास करने के लिए स्वयं अग्निहोत्र नियमित कर दूसरों को भी प्रेरित कर रहे हैं.

श्री नरेंद्र राव, अग्निहोत्र हाउस, मारुतिनगर, 4/42, मलकाजगिरी, हैदराबाद 040-27052812 परिवर्तन करने के लिए लंबे समय से सर्वदाता अग्निहोत्र करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं.

श्री जी.व्ही. रमणा, अग्निहोत्र हाउस, प्लाट नं. 377, एल.बी. कोलोनी, शाहपूर नगर, हैदराबाद 55 समर्पित होकर हर घर में अग्निहोत्र करने के लिए सक्रिय हैं.

श्री अंबाजी मामा अग्निहोत्र हाउस, 22-1-418/1, कालीकबर, हैदराबाद 24 फोन 040-24415969 सत्य, धर्म, अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए अग्निहोत्र कर रहे हैं.

श्री पी.एस.जाजू, प्लाट नं. 305, ठाकुर रेसिडेन्सी, तुलजाभवन के पास में, बरकतपुरा, हैदराबाद 040-27564798 अग्निहोत्र के माध्यम से वातावरण पवित्र करने के लिए संकल्पित हैं.

श्री चंदूराव मोबाइल 9849434528 हैदराबाद अग्निहोत्र के माध्यम से सक्रिय हैं.

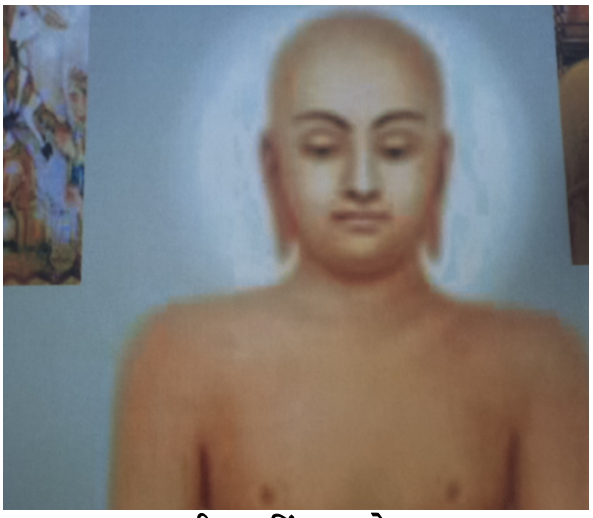

रा-ट्रीय अहिंसा सम्मेलन

अहिंसा संध, 15-1-468, महावीर भवन, फीलखाना, हैदराबाद 500012 भगवान महावीर के मार्गदर्शन में चातुर्मास में अहिंसा के संदेश को पूरे विश्व में पहुंचाने के लिए संगठित होकर कार्य कर रहा है.

श्री जसराज श्रीश्रीमाल, अध्यक्ष रा-ट्रीय अहिंसा सम्मेलन, दूसरे माले, पापालाल प्लाझा, पुराना फीलखाना, हैदराबाद 500012 दूरभा-ा 040-24612398, 09394544929 विश्व में अहिंसा के संदेश को पहुंचाने के लिए 31 अक्तूबर से 2 नवम्बर 2008 तक पूरे विश्व के प्रतिनिधियों के साथ में सक्रिय है.

पंचगव्य चिकित्सक

वैद्य गंगासत्यम जी, 4-5-212, विहिप कार्यालय, विजयश्री कोठी, गांधी ज्ञान मंदिर के पास में भाग्यनगर हैदराबाद दूरभा-ा 040-2711467 असाध्य रोगों का उपचार पंचगव्य से कर रहे हैं.

विश्व हिंदु परि-ाद संगठित होकर अंगोल के संवर्धन तथा संरक्षण करने के लिए गो ब्रांड उत्पादों का विक्रय, गो विज्ञान परीक्षा, गोकथा, सम्मेलन, शिविर, प्रदर्शनी आयोजित कर रहे हैं.

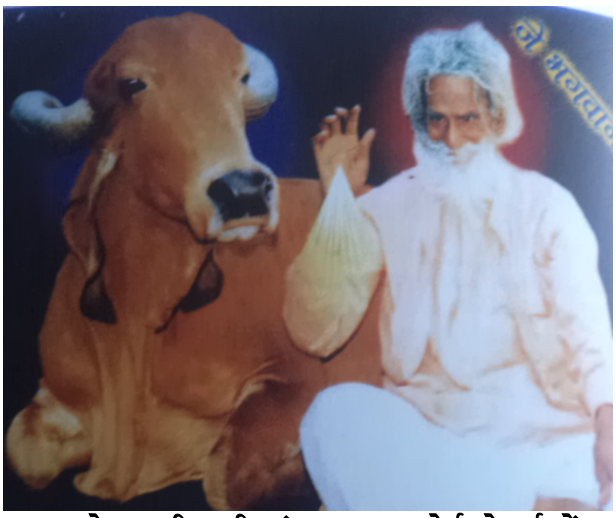

1965 से भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई में पंजीकृत होकर तथा वित्तीय सहयोग से श्री जीवरक्षा ज्ञान प्रचारक मंडल 5-4-383 मुक्काराम जाही रोड हैदराबाद 500001 गोवंश के संवर्धन संरक्षण करने के लिए पूरी तरह से समर्पित है.

गोग्रास की गोचर भूमि पर लोगों के अंदर गोवंश के लिए भावना में कमी आने के कारण ही बहुत ही तेजी से कब्जा होने पर गोवंश हरी घांस के लिए तरस गयी है. गोचर की भूमि को लोगों के अवैध कब्जे को छुड़वाने के लिए संगठित प्रयत्न किया गया है. हरी घांस नहीं मिलने से गोवंश मजबूरी में प्लास्टिक खा रही है. प्लास्टिक के उपयोग पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने के लिए कार्य किया गया है.

वर्तमान में अकाल मृत्यु यानी कम आयु में ही गोवंश प्लास्टिक के कारण बहुत बड़ी मात्रा में आंध्र प्रदेश में मर रहे हैं. गोपालक को बहुत ही अधिक नुकसान प्लास्टिक के कारण हो रहा है. गोपालक प्लास्टिक के कारण उत्पन्न गोवंश की बीमारियों पेट फूलना, पेट में दर्द, अपचन, दस्त, बैचेनी जैसी अनेकों से बहुत ही अधिक परेशान है. गोवंश के स्वास्थय में गिरावट के कारण आर्थिक नुकसान हो रहा है.

मरे हुए गोवंश के पेट में से 80 किलो अधिकतम प्लास्टिक निकाली गयी है. प्लास्टिक पेट में पूरी तरह से चिपकर गोवंश को सांस लेने में बहुत ही तकलीफ उत्पन्न कर रही है.

हम अपने दैनिक जीवन में प्लास्टिक की थैलियों का सर्वाधिक उपयोग अपने खाने की वस्तुओं सब्जी, फलों के रस, दही, गुड़, अनाज के लिए कर रहे हैं. गोवंश खाने के लिए प्लास्टिक की थैलियों में मुंह डालकर अपनी भूख मिटाने का प्रयत्न करते हैं. खाने के साथ साथ में प्लास्टिक की थैलियों को भी खा जाते हैं.

दैनिक आहार में नमक की पूर्ति करने के लिए गोवंश मल तथा गंदगी खा रही है. मल में मौजूद नमक गोवंश को मजबूर करता है. गोग्रास धीमे धीमे बंद सा होता चला गया है.

हर घर से गोग्रास को एक बार फिर से प्रारम्भ करने के लिए बहुत ही समर्पित तरीके से जबरदस्त अभियान चला रही है. भारत की गोशालाओं का अध्ययन कर गोग्रास के तरीकों को देख रही है. आंशिक सफलता मिलने के कारण नये तरीके से गोग्रास को नियमित करने के लिए सीडी पत्रक वेबसाइट के माध्यम से कार्य कर रही है.

पर्यावरण के असंतुलन को सही करने के लिए हर घर में गोमाता के घी से सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय नियमित अग्निहोत्र करने के लिए अभियान चलाया है.

यह संस्था समर्पित भाव से डेयरी टेक्नोलोजी के सहयोग से घर घर में गोपालन को बढ़ावा देने के लिए गोवंश के दूध के 5300 से अधिक रसायनों तथा दूध के उत्पादों मिल्क शेक, खीर, रबड़ी, खूरचन, बासुंदी, श्रीखंड, चोकलेटस, ठंडे सुगंधित दूध, आइसक्रीम, कुल्फी, दही, छाछ, मक्खन, बिलौने का घी, चीज, पनीर, खोए की सभी मिठाईयां, छनने की सभी मिठाईयां आदि को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण देने से रोजगार को बढ़ावा देने के लिए तथा पंचगव्य के प्रचार करने के लिए वितरकों के माध्यम से योजनाबद्व तरीके से लंबे समय से कार्य कर रही है.

दक्षिण भारत में सबसे तेजी से विकसित राजधानी में गोवंश रक्षा तथा शाकाहार पर निरन्तर राज्य स्तरीय सम्मेलन प्रदर्शन शिविर तथा जनसंपर्क के माध्यम से लोगों को जोड़ने के लिए भरपूर कोशिश कर रही है.

46 सालों से निरन्तर सक्रियता के साथ में विश्व में चल रहे सुधारों को देखकर जनमानस की सोच में रसायनिकं खाद तथा जहरीले कीटनाशकों के कारण उत्पन्न असाध्य बीमारियों को अच्छी तरह से समझाकर जैविक की ओर मोड़कर होने वाले असाधारण परिवर्तन करने के लिए संगठित रुप से प्रयत्नशील है.

जनसहयोग के अपार बल पर ही वहां पर लोगों के अंदर अब गोवंश के लिए दया ममता करुणा शाकाहार के लिए जग गयी है. मांसाहार के कारण होने वाले 300 खतरनाक रोगों से बचने के लिए मांसाहार त्यागने वालों की सख्यां में बढ़ोत्तरी हुई है. बैल से चलने वाले यंत्रों को यांत्रिक के बदले में गांव में विकसित करने के लिए ध्यान दिया गया है.

पशु कल्याण अधिकारियों के सहयोग से काफी संख्या में गोवंश को साप्ताहिक मेलों में से बिक्री से रोकने के लिए ठोस उपाय करने के लिए प्रयत्नशील है. गोवंश को कटने से बचाने के लिए किसान के घर में ही रखने के लिए चारागाह विकसित करने के लिए प्रयत्नशील है. गोवंश को हर जगह से बचाकर उनको बहुत ही प्रेम से पालने तथा नंदी बहुत ही अच्छे तैयार कर नस्ल को सुधारने के लिए कार्य चल रहा है.

गोमाताओं के दूध को बढ़ाने के लिए भारतीय सांढ के माध्यम से अपग्रेडिंग करने के लिए पशुपालन विभाग का सहयोग लिया जा रहा है. कृत्रिम गर्भाधान करने के लिए सरकारी दबाव को गांव में कम करने के लिए अच्छे सांढ को छोड़ने के लिए प्रयत्न किया जा रहा है. एनिमल हस्बैंडरी की मदद से बीमारियों को दूर करने के लिए जागरुकता उत्पन्न की गयी हे. उर्जा विकास निगम के परस्पर सहयोग से गोबर गैस से बिजली, सीएनजी बनाने के लिए मानसिकता उत्पन्न की गयी है.

कृ-ि विभाग के परस्पर सहयोग से जैविक खाद फसलरक्षक पंचगव्य दवाओं के माध्यम से लोगों में देवत्व जगाने के लिए संकल्पित है. गोमूत्र से बहुत सारे प्रकल्प रोजगार उत्पन्न करने के लिए प्रारम्भ हुए हैं.

एसपीसीए

एसपीसीए हैदराबाद 1995 से भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से गोवंश संरक्षण संवर्धन करने के लिए लोगों के अंदर सीडी डीवीडी के माध्यम से तथा सम्मेलनों सेमिनार शिविरों बैठकों में बहुत ही अच्छी तरह से जागृति उत्पन्न करने का कार्य कर रही है.

अखिल भारतीय कृ-ि गो सेवा संघ

1991 से भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई से वित्तीय सहयोग लेकर अखिल भारतीय कृ-ि गो सेवा संघ गांधीदर्शन एक्जीबिशन ग्राउंड हैदराबाद आंध्रप्रदेश 500001 समाज के अंदर जागृति उत्पन्न करने के लिए साहित्य एवं सीडी के माध्यम से रात्रि के समय गांव में ओवर हेड प्रोजेक्टर पर लोगों को गोवंश रक्षा गोवंश की विश्व प्रसिद्व प्रजातियों, गोवंश की बीमारियों को घरेलू उपचार करने के बारे में, जैविक खेती करने के लिए जैविक खादों के बारे में, रासायनिक खादों के तैयार करने के बारे में, दूध के सभी महत्वपूर्ण रसायनों के बारे मे, दूध के उत्पादों के माध्यम से रोजगार की संभावनाओं, कृत्रिम गर्भाधान के सरकारी प्रयत्नों, गोबर गैस उत्पन्न करने के लिए तथा गोबर गैस से सीएनजी तैयार करने तक, गोमूत्र की उपयोगिता आदि पर विस्तार से जानकारी देकर महत्वपूर्ण कार्य कर रही है.

ब्लू क्रोस

1993 से भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई से पंजीकृत होकर तथा उनसे वित्तीय सहायता लेकर ब्लू क्रोस ओफ हैदराबाद 403/9, रोड 35, जुबली हिल्स हैदराबाद आंध्रप्रदेश 15 सालों से बहुत ही संगठित रुप से गोवंश के संपूर्ण विकास करने के लिए नस्ल सुधार करने के लिए नंदी तैयार करने का कार्य कर रही है.

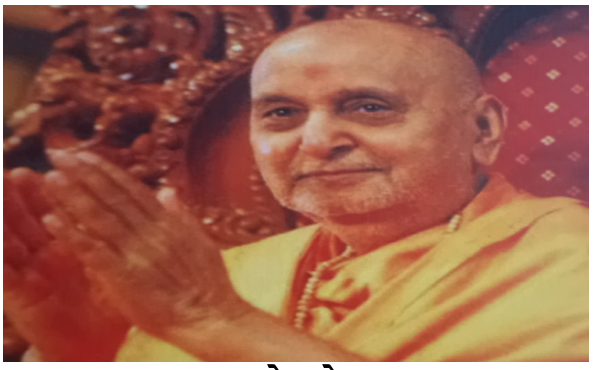

कामधेनु सेवा

1999 से श्री स्वामी नारायण गुरुकुल गोशाला हैदराबाद आंध्रप्रदेश 500075 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई से वित्तीय सहायता प्राप्त कर आंधप्रदेश में नस्ल सुधारने के लिए सांढ के विकास करने के लिए पूरा ध्यान दे रही है. अच्छे सांढ़ विकसित कर गोमाता के दूध में वृद्धि करने का कार्य चल रहा है. गोग्रास के लिए हरे चारे की उचित व्यवस्था की गयी है. बीमार गोवंश के संपूर्ण उपचार करने के लिए बहुत ही अच्छी व्यवस्था है. गोवंश संवर्धन संरक्षण का बहुत ही अच्छा कार्य कर रही है.

भाग्यनगर गो सेवा सदन

2000 से भाग्यनगर गो सेवा सदन 1-2-646, लोवर टेंक बंद रोड हैदराबाद 500003 भारतीय जीव जंतु कयाण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से गोवंश के संवर्धन करने के लिए विशाल भूमि पर जैविक तरीके से हरी घांस उत्पन्न करने के साथ में गोवंश की बीमारियों का उपचार, गोमूत्र से दवाएं तैयार करने तथा फसलरक्षक जैविक खादें, गोबर गैस उत्पन्न करने दूध वितरण आदि बहुत सारे कार्य कर रही है.

भारतीय गोवंश रक्षण परि-द

2002 से भारतीय गोवंश रक्षण परि-द 1-5-212, विजयश्री कोठी हैदराबाद 500095 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से 6 सालों से गोवंश रक्षण करने के लिए अभियान चलाने का कार्य कर रही है.

सहयोग ओरगेनाइजेशन

2005 से सहयोग ओरगेनाइजेशन 6109, 6 ब्लोक, जेपीमहानगर, बालापुर क्रोस रोड, हैदराबाद 500079 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई से पंजीकृत होकर तथा उनसे वित्तीय सहायता प्राप्त कर 3

सालों से गोवंश के वैज्ञानिक महत्व को सभी को बताने के लिए रैली, सम्मेलन, शिविर, सभाओं आदि के माध्यम से कार्य कर रही है.

कामधेनु सेवा

2006 से भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के द्वारा पंजीकृत होकर तथा उनसे वित्तीय सहयोग से 5 सालों से एनिमल रेस्क्यू एंड रिहेबिलेटेशन सोसायटी 1-1-750/5, गांधीनगर, सेकेंड स्ट्रीट, हैदराबाद आंध्रप्रदेश 500080 गोवंश के लिए राहत पहुंचाने के लिए शिविरों के आयोजन का कार्य कर रही है.

अभय गो सेवा संस्थान

2007 से भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से अभय गो सेवा संस्थान 16-9-330/ए, कागज कारखाना, ओल्ड मालक पेट हैदराबाद आंध्रप्रदेश 500036 बहुत ही उत्साह के साथ में 6 सालों से गोवंश संवर्धन करने के लिए नस्ल सुधार, दूध बढ़ाने, दूध के उचित मूल्य, मूत्र के उपयोग, पर्यावरण में संतुलन करने, बीमार गोवंश के उचित उपचार, हरे चारे के आहार के लिए गोचर की भूमि को छुड़वाना तथा गोसंरक्षण करने के लिए दैनिक ढोर बाजारों में से बिक्री किए जाने वाले गोवंश को खरीदकर सुरक्षित रखना आदि बहुत सारे कार्य प्रारम्भ कर चुकी है.

गुंटुर
पंपा सरोवर
श्री महाप्रभुजी की 46 वी बैठक

यह बैठक वर्तमान में अप्रगट है. हम्पी से आठ किलोमीटर दूर यह बैठक है. होस्पेट रेल्वे स्टेशन गुंतकल एवं हुबली के बीच में बैठक है. वर्तमान में वै-णवों को बैठक यात्रा में भावात्मक रुप से बैठक का दर्शन करवाया जा रहा है. वै-णवों को श्री आचार्य जी के तेज का प्रत्यक्ष अनुभव होता है.

पंपासरोवर में वट के वृक्ष के नीचे बैठक है. आप अपने हाथों से सामग्री तैयार करते थे इसलिए कृ-णदास को ढाक के पत्ते लाने के लिए आज्ञा की.

कृ-णदास बहुत दूर निकल गये. एक भयंकर पक्षी पड़ा हुआ था जिसके पास में ढाक के पत्ते थे. जब कृ-णदास पत्ते लेने गये तब पक्षी ने कहा कि मैं रामावतार से बैठा हूं तथा बहुत ही दुःख पा रहा हूं.

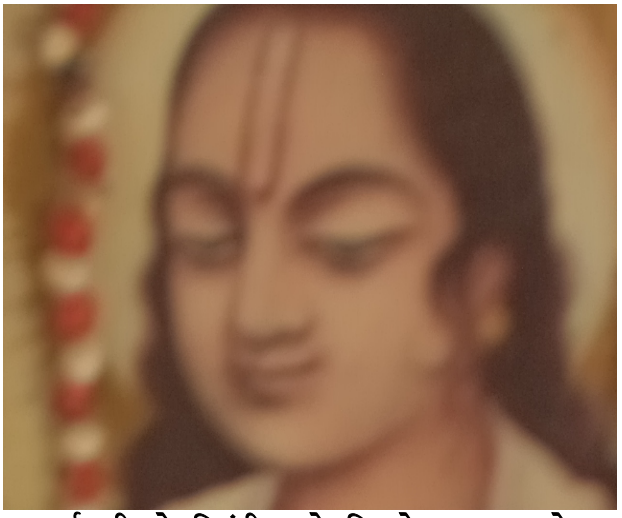

आचार्य जी से विनंती करो कि मेरा उद्धार हो. आचार्य जी ने चरणोदक का जल छिड़कने को कहा. चरणोदक के जल से उद्धार होने के बाद आचार्य जी ने कहा कि मैंने पक्षी के उद्धार करने के लिए तुझे ढाक के पत्ते लेने भेजा था.

आचार्य जी ने यहां पर श्रीमद भगवत सप्ताह की है. कटाक्ष के द्वारा अनेको तामसी जीवों का उद्धार किया.

गुंटुर दूध उत्पादन करने के लिए वर्तमान में बहुत ही आगे है. अंगोल गोवंश के विकास करने के लिए कार्य प्रगति पर है.

अहिंसा

श्री जुगराज जैन एवं श्री गौतमराज हस्तीमल कोठारी जीवरक्षा संघम तेनाली जिला गुंटुर दूरभाश 08644-232913 अहिंसा के कार्य के लिए सक्रिय हैं.

पीपुल फोर एनिमल्स

श्री शांतीलाल जैन पीपुल फोर एनिमल्स, गुंटुर मेन रोड, ब्रोडीपेटा गुंटुर मो 9885133477 अहिंसा के लिए पूरी तरह से सक्रिय हैं.

कामधेनु सेवा

1964 से भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई में पंजीकृत होकर तथा वित्तीय सहयोग से आंध्रप्रदेश जीवरक्षा संघम गुंटुर आंध्रप्रदेश 522003 में गोवंश की रक्षा करने के लिए 47 सालों से बहुत सारे ठोस कार्य कर रही है.

गोमाताओं के दूध के सभी महत्वपूर्ण रसायनों की वैज्ञानिक जानकारी तथा मानव के स्वास्थय के लिए रसायनों के गुणों तथा दूध के उत्पादों के माध्यम से रोजगार की सभी संभावनाओं के लिए सम्मेलन शिविर मेलों सेमिनार बैठकों पत्रकों पत्रिकाओं सीडी डीवीडी के माध्यम से जबरदस्त प्रचार प्रसार करने के लिए कार्य कर रही है.

गोवंश को कतलखाने से बचाने के लिए गांव से ही गोवंश को बेचने से रोकने के लिए प्रयत्नशील है. गोवंश की बिक्री को पूरी तरह से प्रतिबंधित करने के लिए विस्तार से कार्य किया जा रहा है.

आंध्र प्रदेश में गोचर की भूमि पर हो रहे अवैध कब्जों को हटाने के लिए जी जान से कार्य किया जा रहा है.

समय के साथ में हर घर में गोग्रास निकलना बंद हो रहा है. गोवंश की संख्या भी तेजी से कम होने के कारण गो ग्रास देने के लिए गोवंश मिल नहीं रहा है. हर घर में प्रतिदिन नियमित गोग्रास निकालने के माध्यम से गोवंश संवर्धन संरक्षण करने के लिए पूरी तरह से समर्पित है. गोग्रास के महत्व को समझाने के कारण ही अब धीरे धीरे परिवर्तन दिखाई दे रहा है.

पर्यावरण को पूरी तरह से संतुलित करने के लिए हर घर में गाय के घी से सुबह एवं संध्या के समय में अग्निहोत्र, धूप, हवन करने के लिए प्रयत्न किया जा रहा है. हर घर में गोवंश को रखने के लिए भी प्रयत्न किया जा रहा है.

आसपास के गांवों में गोवंश के विकास करने के लिए संस्था बैल से चलने वाले संयंत्रों के उपयोग करने के लिए जागृति उत्पन्न कर रही है. 44 सालों से निरन्तर गोवंश के संवर्धन करने के लिए गांव गांव में प्रचार प्रसार कर रही है. गोवंश गोमूत्र गोबर को एकत्र करने के साथ में मानव के उपयोग करने के लिए पंचगव्य दवाओं तथा गोबर गैस से सीएनजी बनाने के संपूर्ण प्रशिक्षण देने का कार्य कर रही है.

1985 से भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से डिस्ट्रीक्ट एनिमल वेलफेयर कमिटी गुंटुर गोवंश संवर्धन संरक्षण करने के लिए बहुत ही अच्छा कार्य 26 सालों से निरन्तर कर रही है.

1996 से श्री गोसंरक्षण पुनिआश्रम सातेनापल्ली जिला गुंटुर 522403 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई में पंजीकृत होकर तथा उनके वित्तीय सहयोग से गोवंश संरक्षण करने के लिए मजबूती के साथ में अपार धन लगाकर 15 सालों से कार्य कर रही है.

सिकंदराबाद

पंचगव्य चिकित्सक

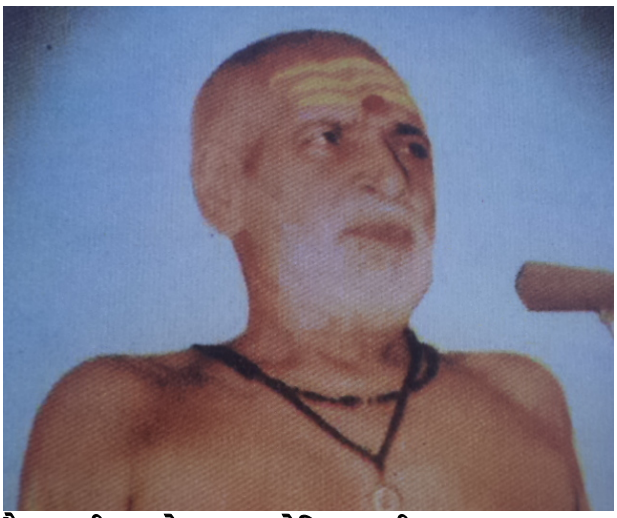

वैद्य श्री सुरेश जाखोटिया जी, 3-4-252, महाकाली स्ट्रीट टेम्पल रोड, सिंकदराबाद मोबाइल 9440708757 राजस्थान के मूल निवासी हैं तथा वर्तमान में पंचगव्य चिकित्सक हैं.

मनोविज्ञान में गहरी समझ है तथा मरीज के साथ में बहुत अच्छा तालमेल रखकर उपचार कर रहे हैं.

वार्ताओं, बैठकों तथा सम्मेलनों के माध्यम से समाज में परिवर्तन करने के लिए अपना पक्ष वैज्ञानिक आधार पर रख रहे हैं.

दूध कल्प से काया कल्प तथा आयुर्वेद में कार्य

करने पर पंचगव्य साहित्य का अध्ययन करने के बाद में स्वयं आवश्यक आयुर्वेदिक तथा पंचगव्य औ-ाधियों का निर्माण शास्त्रों के आधार पर कर रहे हैं.

उनके द्वारा कामधेनु साहित्य का अन्य भा-ाओं से तेलगु में अनुवाद करने के निरन्तर प्रयत्नों के कारण ही मरीजों में पंचगव्य महो-ाधियों पर विश्वास बढ़ रहा है.

राजकोट से 1200 रु. किलो गीर गायों का घी मंगवाकर तथा नागपुर की पंचगव्य महो-ाधियों से 15 सालों से 3 अंगोल नस्ल की गायें रखकर असाध्य रोगों का उपचार कर रहे हैं.

10 सालों के अभ्यास में बीमारियों पर गोमूत्र का प्रभाव अनुभव किया है. पर्यावरण पवित्र करने के लिए अग्निहोत्र नियमित कर रहे हैं.

पीपुल फोर एनिमल्स

2000 से श्रीमती मनेका गांधी जी के मार्गदर्शन में कानूनी आधार पर पीपुल फोर एनिमल्स हैदराबाद सिकंदराबाद 1 दुर्गाभवन, रा-ट्रपति रोड, सिकंदराबाद 500003 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से 12 सालों से गोवंश संरक्षण तथा संवर्धन करने का कार्य संगठित रुप से कर रही है.

फ्रेंडस ओफ एनिमल्स

2002 से फ्रेंडस ओफ एनिमल्स बी-153, सैनिकपुरी, सिकंदराबाद 500094 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से 8 सालों से लगातार गोवंश के सत्यानाश को रोकने के लिए जनजागृति का कार्य कर रही है

केयर फोर एनिमल्स

2006 से केयर फोर एनिमल्स बी-237, सिकंदराबाद 500094 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से 2 सालों से गोवंश के रखरखाव के लिए जन जन को प्रचार प्रसार के माध्यम से संदेश देकर कार्य कर रही है.

आंध्र प्रदेश सरकार आंध्रप्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, गुंटूर, काकीनाडा, कम्पासागर, महानन्दी, विशाखापटटनम, अंगोल केटल ब्रीडिंग फार्म, गुंटूर, सेंट्रल हर्ड रजिस्ट्रेशन स्कीम अंगोल आंध्रप्रदेश 523001 में प्रयत्नशील है.

विद्यानगर

श्री महाप्रभुजी की 49 वी बैठक

यह बैठक वर्तमान में अप्रगट है. यहां पर वही व्यक्ति आयेगा जिसका कल्याण होगा. विद्याकुंड पर आपकी बैठक है. वर्तमान में विद्यानगर के अवशे-ा मौजूद हैं. विद्यानगर की सम्पन्नता का अंदाज अवशे-ा के अवलोकन से पता चलता है.

कनकाभि-ोक की बैठक

कनकाभि-ोक की बैठक होने के कारण सभी बैठकों में इस बैठक का बहुत ही अधिक महत्व है.

वै-णवों को बैठक यात्रा करते समय भावात्मक रुप से ही बैठक के दर्शन करवाये जाते हैं. दर्शन करने पर वै-णव भावविभोर हो जाते हैं. वै-णवों को श्री आचार्य जी के अलौकिक प्रभाव का अनुभव यहां पर हमेशा होता है.

विजयनगर

वर्तमान में विद्यानगर हम्पी के नाम से जाना जाता है. होस्पेट से 11 किलोमीटर दूर हम्पी गांव है. तुंगभद्रा नदी के पास में हम्पी गांव विजयनगर में है.

किन्किंधा

सुग्रीव की राजधानी किन्किधा प्राचीन समय में यहां पर थी. संवत 1490 में दक्षिण भारत में विद्यानगर बहुत ही महत्वपूर्ण था. उस समय विद्यानगर में मद्रास, मैसूर, मदुरई, हैदराबाद, त्रावणकोर, तंजोर आते थे.

निर्यात

विश्व में कई देशों में विद्यानगर का व्यापार चलता था. विद्यानगर 100 प्रतिशत जैविक राज्य था. विद्यानगर के 70 बंदरगाह थे. विद्यानगर की रचना बहुत ही रमणीय थी.

विद्या का नगर

2000 ब्राहमण राजा के पास में प्रतिदिन पूजा पाठ एवं यज्ञ करने के लिए आते थे. 4 वेद, अठारह पुराण एवं सभी शास्त्र राजा के पास में मौजूद थे. राजा ने अपने पुस्तकालय के लिए विद्वानों को नियुक्त कर रखा था. विद्या अध्ययन करने के लिए विद्यानगर बहुत ही प्रसिद्ध थी. यहां पर हर व्यक्ति विद्या अध्ययन कर विद्वान था.

सोने की बारिश

30 लाख की जनसंख्या वाले विद्यानगर अपनी सम्पन्नता के कारण ही महत्वपूर्ण था. विद्यानगर में कृ-णदेव के जन्म के समय पौने धंटे तक सोने की बारिश हुई थी. वास्तव में अदभुत दैवी चमत्कार होने के कारण ही विद्यानगर विश्व में जाना गया था.

बाहर से आने वाले राजदूतों, अतिथियों, विद्यार्थियों के लिए भव्य भवन बनाये गये थे.

4000 भव्य मंदिर

विद्यानगर में 4000 बड़े मंदिर तथा असंख्य छोटे मंदिर मौजूद थे. धर्म के प्रति बहुत ही उच्च भावना थी.

गोवंश के लिए विशे-ा भावना थी. गोवंश के संवर्धन करने के कारण ही अपार गोवंश मोजूद था. नंदी का विकास किया गया था. गायें प्रसन्नता के साथ में बहुत ही अधिक दूध देती थी.

विशाल सेना

महान प्रतापी चंद्रवंशी राजा श्री वीरनरसिंहजी विद्यानगर के राजा थे. उनके पास में 10 लाख पैदल सिपाही, 1 लाख धोड़े सवार, 5 हजार हाथी की सेना थी. उनके नाम से पूरे भारत के मुसलमान बहुत ही अधिक भयभीत थे.

मुसलमान भय के मारे भाग गये थे. श्री वीरनरसिंहजी महाराज भगवान कृ-ण के परम भक्त थे.

भगवान कृ-ण के वरदान के कारण ही श्री वीरनरसिंहजी को दैवी गुणों से युक्त पुत्र प्राप्त हुआ था. कृ-णदेवजी भी कृ-ण के ही उपासक थे. प्रतिदिन श्रीमद भागवत कथा श्रवण करते थे.

कृ-णदेव राजा की पत्नी माधव संप्रदाय के आचार्य श्री व्यासतीर्थ की शि-या थी. कृ-णदेव राजा को भी माधव संप्रदाय का अनुयायी बनाने के लिए प्रयत्न चल रहा था.

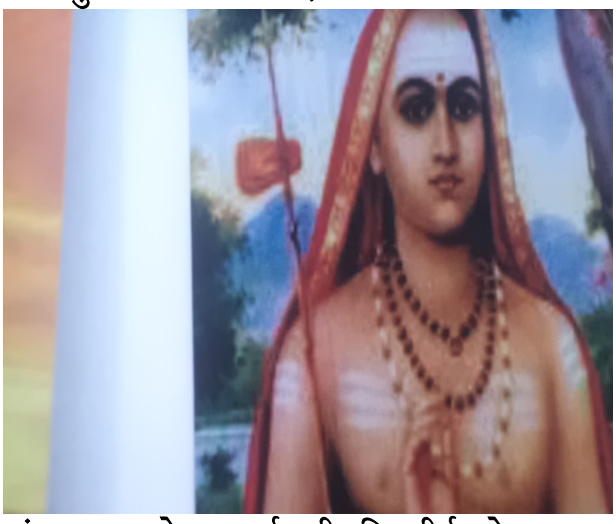

शांकर मत के आचार्य श्री विद्यातीर्थ के द्वारा विरोध करने के कारण वि-ाम परिस्थिति उत्पन्न हो गयी थी.

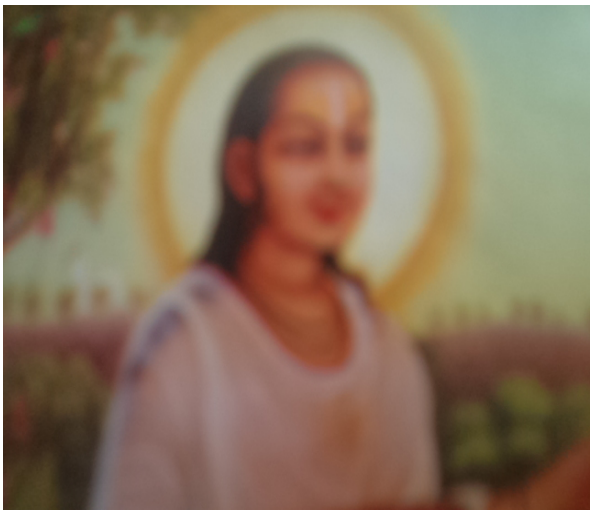

भव्य सम्मान

कृ-णदेव राजा के द्वारा धर्मसभा में विजय प्राप्त करने वाले आचार्य का कनकाभि-ोक करने का निश्चय किया. पूरे भारत से विद्वान आचार्यों को आमंत्रित करने के लिए अपने आदमियों को सभी स्थानों में भिजवाया था. पूरे भारत से लाखों की संख्या में ब्राहमण विद्यानगर में पधारे थे.

ब्राहमणों के स्वागत करने के लिए बहुत ही अच्छी भावना के साथ में कर्मचारी लगे थे. उनके रुकने तथा भोजन तथा सभी आवश्यक वस्तुओं का प्रबंध सर्वश्रे-ठ था. ब्राहमण राजा के कारण बहुत ही प्रसन्न थे.

कृ-णदेव राजा के द्वारा 28 दिनों तक धर्मसभा में आचार्यों को अपना मत रखने के लिए अवसर दिया गया था. वै-णव आचार्य बहुत ही कम आने के कारण धर्मसभा में अपना मत नहीं रख पाये थे.

मायावादी हावी

मायावादियों के द्वारा मायावाद को स्थापित करने के लिए अपना मत रखने पर राजा को बहुत ही अधिक मानसिक परेशानी हुई. विद्यातीर्थ के द्वारा व्यासतीर्थ पर विजय प्राप्त करने के कारण उनके कनकाभि-ोक का निश्चिय किया गया था.

एक दिन स्वप्न में कृ-णदेव राजा को भगवान ने कहा कि मेरे एक स्वरुप श्री वल्लभाचार्य जी आपकी धर्मसभा में 28 वे दिन पधारकर सभी मायावादियों का

खंडन कर वै-णव मत का स्थापन करेंगे.

एक समय आप मायामत का खंडन करने के लिए दामोदरदास के घर के पास राजमार्ग से होते हुए दक्षिण के लिए पधार रहे थे. दामोदरदास पूर्व के बिछड़े हुए थे इसलिए राजमार्ग की ओर देख रहे थे.

आचार्य जी जब वहां से जाने लगे तब दामोदरदास को आचार्य जी का दर्शन साक्षात कोटिकंदर्पलावण्य के हुए तब दामोदरदास ने उपर से सीधा कूदकर आचार्य जी को सा-टांग दंडवत प्रणाम किया. आचार्य जी ने दामोदरदास को देखकर कहा कि दमला तू आयो.

आचार्य जी जब शहर के बाहर पधारे तब दामोदरदास उनके चरणारविन्द के पीछे चले. एक बहुत ही सुन्दर चोतरा था उस पर आप बिराजे तब दामोदरदास सामने बैठे. आपसे विनंती की कि मुझे सेवक करें. आचार्य जी ने दामोदरदास को नाम सुनाया.

दामोदरदास को लेकर 27 वे दिन विद्यानगर पधारे. प्रथम अपने मामा के धर पधारे. मामा ने अति ह-र्ा से पधराया. मामा ने कहा कि राजा के दानाध्यक्ष हम हैं. यहां बहुत सम्पत्ति मिलेगी. तुम बहुत पढ़े हो. हम तुम्हारा परिचय राजा से करवायेंगे.

आचार्य जी मामा की बात सुनकर मुस्कुरा कर चुप रहे. मामा ने रात्रि के समय भोजन करने के लिए विनंती की. आपने कहा कि आप स्वयंपाकी हैं. अपने हाथ का ही बनाकर लेते हैं. मामा को आचार्य की बात सुनकर बहुत ही बुरा लगा. मामा ने कहा कि तुम तो हमारा अपमान कर रहे हो. आप तो साक्षात ईश्वर हैं इसलिए सब सहन कर चुप रहे.

मामा ने उस समय राजा के पास जाकर कहा कि नये ब्राहमण को प्रवेश न दें. 12 सालों से मायावादी तथा वै-णवों के बीच में विवाद चल रहा है तथा सरकार पर खर्च का भार बहुत है.

मायावादी अति प्रबल हैं इसलिए मायावादी विजयी होंगे. मामा ने राजदरबार में आचार्य जी के प्रवेश को रोकने के सभी उपाय कर घर लौटे.

मां इलमागारु ने आचार्य को रात्रि में भोजन ग्रहण करने के लिए बहुत समझाया. आचार्य जी ने मां से कहा कि वे सुबह भोजन ग्रहण करेंगे. रात्रि में विश्राम करने के लिए पोढे.

आधी रात्रि के समय श्री गोवर्धननाथ जी आचार्य जी के पास में पधारे. आचार्य जी को जगाय के कहा कि ऐसे गर्वित वचन सुनकर मामा के घर में क्यों रह रहे हो?

आधी रात के समय ही आप श्री गोवर्धननाथ जी के आदेश पर विद्याकुंड दामोदरदास और कृ-णदास को लेकर पधारे. देहकृत्य कर स्नान कर नित्य नियम किया.

कमंडल को आज्ञा की कि राजा कृ-णदेव की सभा को खबर करो. तब कमंडल राजा की सभा में अंतरिक्ष से गया. तब राजा सब सभा सहित खड़ा हो गया और कमंडल को सा-टांग दंडवत किया. कमंडल के तेज को देखकर राजा ने विचार किया कि यह कमंडल तो ईश्वर का है.

राजा ने कमंडल से विनंती की कि तुम अपने स्वामी को पधरा लावो. आचार्य जी अपने सभी सेवको के

साथ में राजा की सभा में पधारे. आचार्य जी के अदभुत तेज को देखकर राजा दौड़कर सामने पधराने गया.

राजा ने कहा कि मायामत का खंडन करें. आचार्य जी गजगति वेग सो पधारे. राजा ने सौ मन सोने के सिंहासन पर आचार्य जी को बिठाया. आचार्य जी ने पूछा राजा क्या झगड़ा है?

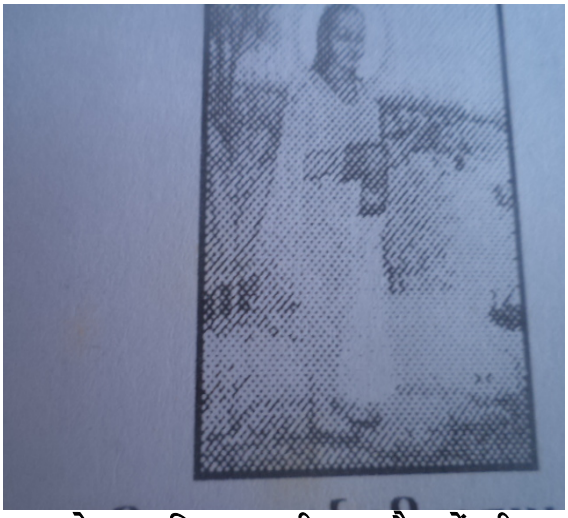

राजा ने कहा कि मायावादी तथा वै-णवों की चर्चा हो रही है. तब आचार्य जी ने कहा कि वै-णव संप्रदाय तो हमारा है. जिसको चर्चा करनी है हमारे समीप आकर बैठो.

अगले 28 दिनों तक मायावादियों ने आचार्य जी से लगातार प्रश्न किये तो आचार्य जी ने एक उत्तर में सभी मायावादियों को निरुत्तर कर दिया.

प्रथम 8 दिनों तक विद्यातीर्थ के साथ में चर्चा हुई. 10 दिनों तक तार्किक मिमांसा, सांख्य के विद्वानों के साथ में चर्चा हुई. गागा भटट के साथ में तीन दिनों तक चर्चा की. सोमेश्वर पंडित, वै-णवों के साथ में सात दिनों तक चर्चा चली.

अंत में मायावादी हाथ जोड़कर बोले आप तो साक्षात ईश्वर हैं. आपका दर्शन आज हमको हुआ है.

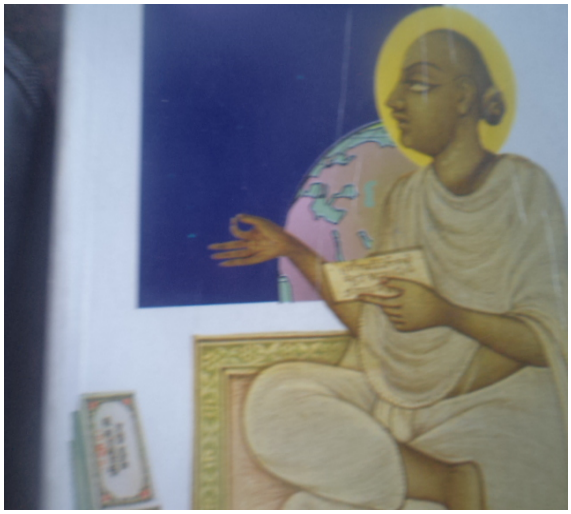

जगदगुरु

11 साल की आयु में ही आपने मायावाद का खंडन कर ब्रहमवाद का स्थापन किया. आपका जयजयकार हुआ. आपको सभी की सम्मति से जगदगुरु की उपाधि से सम्मानित किया गया. राजा के द्वारा आचार्य जी की शोभायात्रा निकाली गयी थी.

स्वागत

आचार्य जी पालखी में नहीं बैठे थे इसलिए उनकी पादुका को पालखी में पधराया गया था. स्वयं पैदल चल रहे थे. मार्ग में हजारों लोगों ने उनका स्वागत पु-पों की बारिश कर की थी.

राजा कृ-णदेवराय स्वयं आचार्य जी का सेवक हुआ तथा बहुत सारे सेवक करवाये.

दिव्य एवं अलौकिक श्रंगार

कनकाभि-ोक के पूर्व हर धर में तोरण बांधे गये थे. आंगन में मंगल कलश रखे गये थे. नगर के मार्ग ध्वजा पताकाओं से सजाया गया था.

भव्य मंडप

भव्य मंडप तैयार करवाया गया था. खास दरबार भरा था. आचार्य जी के रुकने के स्थान पर मंत्री, बंधु, पुरोहितों को भेजा.

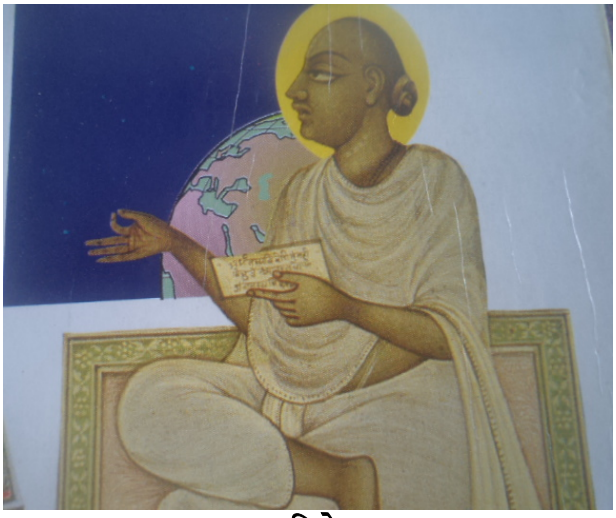

कनकाभि-ोक

कृ-णदेवराय ने आचार्य जी का कनकाभि-ोक वेदमंत्रों के साथ में बहुत ही आनन्द के साथ में करवाया और विनंती की कि यह सब द्रव्य आपका है. आचार्य जी ने कहा कि यह स्नान जल हो गया है इसलिए हजार ब्राहमण आये हैं सबको बांट दीजिये.

सौ मन सोना ब्राहमणों में वितरित किया. ब्राहमण आचार्य जी का त्याग देखकर उनकी प्रशंसा कर अपने धर चले गये. राजा को नाम सुनाया तो राजा ने सोना मुहर का थाल आपको दिया.

7000 सोने महोरों में से आपने मात्र 7 सोना मुहर ग्रहण की. भगवान विठठलनाथजी के नुपुर सिद्ध करवाने के लिए 7 सोना महोरों का उपयोग पंडरपुर में किया. चारों संप्रदाय के आचार्यों ने आपका तिलक किया. आपका तेज देखकर बहुत सारे जीव सेवक बन गये. आचार्य जी ने राजा को राज्य करने के लिए बहुत सारे आवश्यक कार्य समझाये.

राजा आचार्य जी को विदा करने के लिए तैयार नहीं था. आचार्य जी ने राजा को समझाया कि हम सदैव कनकाभि-ोक के स्थल पर दर्शन देंगे.

आचार्य जी के विद्यानगर से जाने के बाद में राजा के सभी मनोरथ आचार्य जी पूरे करते रहे.

राजा ने आचार्य जी के साथ में सेवकों को भी भिजवाया. आचार्य जी ने सभी सेवकों को राज्य की सीमा से वापस भेज दिया.

राजा ने अपने विशे-ा सेवकों को आचार्य जी की यात्रा के समाचार लाने के लिए भिजवाया. आचार्य जी जब जगन्नाथजी के दर्शन करने के लिए पहुंचे तब वहां के सभी समाचार राजा को सेवकों ने दिये. राजा ने आचार्य जी के सम्मान करने के लिए बहुत सारे सामानों के साथ में अपने सेवकों को भिजवाया.

जये-ठाभि-ोक

राजा ने अडेल में भी आचार्य जी का उत्सव मनाने के लिए विशे-ा तैयारियां की.

विशाखापटनम

विशाखापटनम इस्पात संयंत्र के कारण विश्व में बहुत ही महत्वपूर्ण है. विशाखापटनम में अंगोल के विकास करने के लिए कार्य किया गया था. अधिक दूध की लालच में अंगोल के विकास में बाधा आयी थी. 1871 तक अंगोल के विकास करने के लिए मेलों का आयोजन किया गया था. मेलों में अंगोल बैलों का मूल्य बहुत ही अच्छा मिल जाता था.

सरकार के द्वारा अंगोल का विकास नहीं हो पाया है. सरकार ने अंगोल के विकास करने के लिए जितने प्रयत्न किये वे सभी अधूरे साबित हुए थे. दूध तथा दूध के सभी उत्पादों की मांग अधिक रहने के कारण ही दूध का मूल्य अच्छा मिल रहा है. दूध उत्पादन का कार्य प्रगति पर है. सम्पन्नता के कारण ही वर्तमान में आक-र्ाण का केंद्र है. समुद्र तट से लगा रहने के कारण मौसम सुहावना रहता है. समुद्र किनारे पर समूह में लोग आते रहते हैं. 12 माह यहां पर प्राकृतिक सौंदर्य के कारण ही लोग घूमने के लिए आते रहते हैं.

विशाखा गोशाला

श्री राजेंद्र गोलेच्छा अध्यक्ष विशाखा गोशाला विशाखापटनम 9885679960 अहिंसा के लिए सक्रिय हैं.

एनिमल वेलफेयर सोसायटी

एनिमल वेलफेयर सोसायटी 27 एवं 37 मेन रोड विशाखापटटनम आंध्रप्रदेश 530002 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से 1971 से 37 सालों से लगातार सीडी, डीवीडी, रैली आदि में बैनर, फलेक्स, पोस्टर, चित्र प्रदर्शनी के माध्यम से गोवंश संवर्धन संरक्षण का कार्य कर रही है.

काकीनाडा

काकीनाडा में अंगोल प्रजाति के विकास करने के लिए कार्य किया गया था. अंगोल के विकास करने के कारण ही काकीनाडा सम्पन्न है. सरकार के द्वारा अंगोल के विकास करने के लिए बहुत ही सीमित प्रयत्न किये गये थे. अंगोल अपने सीधेपन के कारण ही विकसित हुआ है. 1871 के पूर्व गांव गांव में भव्य मेलों की भूमिका अंगोल के विकास में सबसे अधिक महत्वपूर्ण रही है.

एसपीसीए

1972 से पंजीकृत कर भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से एसपीसीए काकीनाडा एसपीसीए कोंपलेक्स रामायणपेटा काकीनाडा आंध्रप्रदेश 533003 गोवंश संवर्धन संरक्षण का कार्य 39 सालों से बहुत ही मजबूती के साथ में कर रही है.

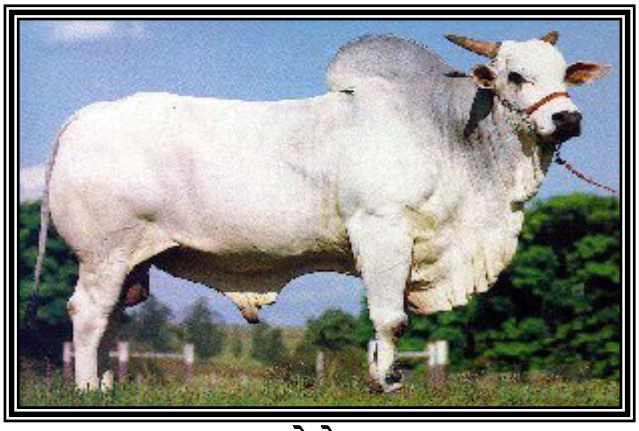

नेलोर

नेल्लोर विश्व में अदभुत गोवंश प्रजाति के लिए प्रसिद्ध है. 4000 सालों पुरानी प्रजाति नेल्लोर को उसके 6 फीट की उंचाई तथा स्वभाव से बहुत ही सरल होने के कारण ही भगवान महाकाल का वाहन माना गया है.

भारत में धनी व्यक्ति के मरने के बाद में उसकी याद में 14 वें दिन उसकी आत्मा को शांति मिले तथा गोवंश के संपूर्ण विकास करने के लिए ब्राहमण नंदी छोड़ने की परम्परा बहुत ही प्राचीन है. ब्राहमण नंदी गांव की संपत्ति मानी जाती थी. नेल्लोर नंदी छोड़ने की परम्परा आंध्र में भी गांव गांव में 1858 तक मौजूद थी जो धीरे धीरे समाप्त होने पर है.

नेल्लोर को वत्स प्रधान माना गया है. 20 सालों तक नेल्लोर गोवंश बहुत ही आराम से जीवित रहकर सेवा करता है. कृत्रिम गर्भाधान आसानी से करने के कारण ही विश्व में नेल्लोर का विकास तेजी के साथ हुआ है. बछड़ों का जन्म बिना किसी की मदद से बहुत ही आसानी के साथ हो जाता है. 2 बछड़ों के जन्म के बीच का अंतर कम होता है. नेल्लोर नस्ल के बैल खेती करने तथा परिवहन के लिए 4 टन भार के साथ में विश्व में सर्वश्रे-ठ माने गये हैं.

नेल्लोर की गोवंश प्रजाति का विकास 70 सालों में भारत के बदले में सबसे अधिक ब्राजील में किया गया है.

ब्राजील वर्तमान में नेल्लोर जैसी प्रसिद्ध भारतीय गोवंश के विकास के कारण अर्थव्यवस्था मजबूत कर चुका है. ब्राजील से विश्व के कई देशों में नेल्लोर गोवंश का निर्यात किया जाता है.

वर्तमान में ब्राजील में नेल्लोर गोवंश की संख्या 10 लाख से अधिक हो गयी है.

ब्राजील के द्वारा मांस एवं दूध की आवश्यकता के लिए नेल्लोर का विकास किया गया है. नेल्लोर को गीर एवं कांकरेज के साथ में मिलाकर इंडो ब्राजील नयी प्रजाति विकसित की गयी है.

1985 से भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से गोवंश संवर्धन संरक्षण का कार्य डिस्ट्रीक्ट एनिमल वेलफेयर कमिटि वेटनरी होस्पीटल कंपस रेल्वे फीडर्स रोड नेलोर आंध्रप्रदेश 524004 गोवंश के बीमार हो जाने पर उपचार करने के लिए जबरदस्त जागृति उत्पन्न करने के लिए शिविरों तथा सम्मेलनों के माध्यम से जनचेतना 23 सालों से उत्पन्न कर रही है.

एल्लुरु

1988 से एल्लुरु गोसंरक्षण समिति रामचंद्र राव पेट एल्लुरु आंध्रप्रदेश 534002 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से 23 सालों से पूरी उर्जा के साथ में संगठित स्तर पर गोवंश संरक्षण करने के लिए करोड़ों रु. खर्च कर गांव गांव में युवा उर्जावान समर्पित कार्यकर्ताओं को तैयार करने का कार्य कर रही है.

करनूल

करनूल में 1871 के पूर्व तक अंगोल के विकास करने के लिए भव्य मेलों का आयोजन किया गया था. करनूल तेल उत्पादन के लिए भारत में प्रसिद्ध है तथा गोवंश के कारण ही सम्पन्नता बहुत है.

करनूल के किसान प्रगतिशील विचारधारा के हैं तथा गोवंश पालन करने के लिए सदैव ही तत्पर रहते हैं.

करनूल में दूध का मूल्य बहुत ही अच्छा मिल रहा है. करनूल में दूध उत्पादन का कार्य प्रगति पर है.

अहिंसा

श्री बी बालाजी आदोनी थामा मार्केट आदोनी जिला करनूल मोबाइल 9705113637 अहिंसा के लिए सक्रिय हैं.

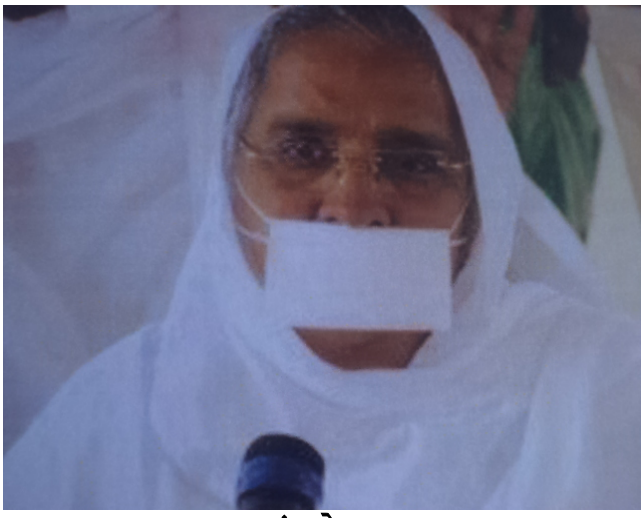

करुणा इंटरनेशनल

श्री मणिलाल जैन करुणा इंटरनेशनल करनूल केंद्र, 38झ41, मीनछीन बाजार, करनूल मो. 9346467941 तथा श्री गुलाबचंद जैन 38झ136 मीनछीन बाजार करनूल 9490006931 अहिंसा एवं करुणा के संदेश को पहुंचाने के लिए सक्रिय हैं.

एनिमल वेलफेयर

1989 से डिस्ट्रीक्ट एनिमल वेलफेयर कमिटी करनूल आंध्रप्रदेश 518001 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से 23 सालों से संपूर्ण करनूल जिले में जबरदस्त जागृति उत्पन्न करने के लिए

प्रचार प्रसार का कार्य कर रही है.

चित्तूर

चित्तूर में भव्य मेलों का आयोजन 1871 के पहले तक किया गया था जिसके कारण ही अंगोल नस्ल यहां पर पायी जाती है. दूध का उत्पादन चित्तूर में अच्छा है. चित्तूर अंगोल नस्ल के कारण ही बहुत ही सम्पन्न है.

1991 से कृ-ण सोसायटी फोर वेलफेयर ओफ एनिमल्स 55 बाजाना मंदिर, सिरु गुरुराजापालम ले टीआरकानडीगा चित्तूर जिला आंध्रप्रदेश 517571 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से संगठित स्तर पर आंध्रप्रदेश में 21 सालों से कार्य किया जा रहा है.

राजमुंद्री

अहिंसा

श्री पीबीके आचार्य जीव रक्षा संघम राजमुंद्री मो 9939656369 अहिंसा के लिए सक्रिय हैं.

अंगोल नस्ल के संपूर्ण विकास करने के कारण दूध उत्पादन में निरन्तर प्रगति कर राजमुंद्री सम्पन्न है.

खम्माम

खम्माम अंगोल नस्ल को विकसित कर दूध उत्पादन के लिए प्रगति कर रहा है.

विजयवाड़ा

गौमाता गौसेवा संस्थान चैरिटेबल ट्रस्ट

2010 में श्री सुरेश कुमार चौधरी जी 9533009750 ने गौमाता गौसेवा संस्थान चैरिटेबल ट्रस्ट, द्वारा श्री सुरेश कुमार चौधरी, 27.23.235, गोपाल रेडडी रोड, गोवर्नर पेट, विजयवाड़ा 520002 में स्थापित की है. 18 पदाधिकारी तथा 30 सदस्य हैं.

5000 रु. रोज का चारा खिलाने के लिए आवश्यकता है. जमीन मार्गदर्शन की समस्या है. वर्तमान में 1000 रु. प्रतिदिन जनता से प्राप्त कर 1000 रु. प्रतिदिन खर्च किया जा रहा है.

अहिंसा

श्री हस्तीमल सी जैन 11-60-22, तीसरा माला, हैजुल्लाह साहब मार्ग, बड़ा डाकघर के पास में विजयवाड़ा 520001 मो. 9440562801, 9032963204 अहिंसा के लिए सक्रिय हैं.

विजयवाड़ा दूध उत्पादन करने के लिए आंध्रप्रदेश में अंगोल नस्ल के कारण ही वर्तमान में बहुत ही आगे है.

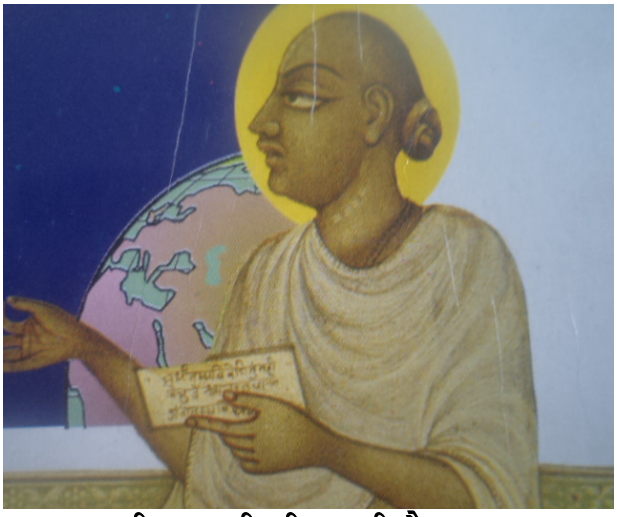

श्रीमहाप्रभुजी की 37 वी बैठक

श्री मंगलगिरी स्टेशन, पन्ना नरसिंह जी का मंदिर, मुकाम विजयवाड़ा में अप्रगट बैठक है. छोकर के वृक्ष के नीचे आप यहां पर बिराजे हैं. आचार्य जी वर्तमान में भी साक्षात यहां पर बिराज रहे हैं. आज भी वै-णव आपकी कृपा का साक्षात अनुभव यहां पर कर रहे हैं.

आपसे मिलने के लिए नरसिंह जी सामने से आये

हैं. आपने आदर के साथ में खड़े होकर नमस्कार किया तथा कहा कि नरसिंहाय नमः. आपने विनंती की कि आप परिश्रम लेकर यहां पर क्यों पधारे? हम तो स्वयं आपके दर्शन करने के लिए मंदिर में आने वाले ही थे. तब नरसिंह जी ने कहा कि मित्र जो पधारे हैं तो धीरज कैसे रहे? आप तो हमारे सर्वस्व हैं. आप मंदिर में बाद में अवश्य ही पधारे.

यहां पर बैठक यात्रा में वै-णव भावपूर्वक मिश्री का पन्ना श्रीमहाप्रभु जी के भाव से नरसिंह जी के मंदिर में आरोगाते हैं. श्री महाप्रभु जी नरसिंह जी के मंदिर में जाने के पूर्व कृ-णदास को आज्ञा की कि मिश्री का पन्ना सिद्ध करो.

श्री महाप्रभुजी ने नरसिंह जी को मिश्री का पन्ना सुगंध गुलाबजल मिलाकर आरोगाया था. दामोदरदास के द्वारा पूछने पर आचार्य जी ने बताया कि मिश्री का पन्ना श्रम निवारक है. नरसिंह जी को प्रगट होने के साथ में ही युद्ध करने का श्रम हुआ था. यहां पर श्री आचार्य जी ने श्रीमद भागवत सप्ताह की है. प्रतिदिन श्री नरसिंह जी कथा सुनने के लिए आते थे.

कम्पासागर

थारपारकर नस्ल के विकास करने के लिए सरकारी प्रयत्न चल रहे हैं.

ममनूर

थारपारकर नस्ल के विकास करने के लिए सरकारी प्रयत्न चल रहे हैं.

करीमनगर

करीमनगर दूध उत्पादन करने के लिए आगे है तथा गोवंश के विकास करने के कारण ही सम्पन्न है. थारपारकर नस्ल के विकास करने के लिए सरकारी प्रयत्न चल रहे हैं. करीमनगर में अंगोल गोवंश के विकास करने के लिए प्रयत्न किये गये हैं.

श्री गंपा लक्ष्मीराजम सुरभी गोशाला, ताटीपल्ली जग्तियाल, करीमनगर अहिंसा के लिए सक्रिय हैं.

1997 से करीमनगर एनिमल कांइडनेस एसोशियेशन 3-7-71 वावीलालापल्ली करीमनगर आंध्रप्रदेश 505001 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के द्वारा पंजीकृत होकर तथा उनके वित्तीय सहयोग से 14 सालों से लगातार गोवंश पर दया करने के लिए कार्य कर रही है.

वारंगल

अंगोल नस्ल का विकास दूध के लिए विशे-ा रुप से किया गया है. अंगोल नस्ल के कारण ही वारंगल सम्पन्न तथा भारत में बहुत ही प्रसिद्ध है. वारंगल में दूध की मांग निरन्तर बढ़ने के कारण दूध तथा दूध के उत्पादों का मूल्य अच्छा मिलने के कारण ही दूध उत्पादन को बढ़ावा मिल रहा है.

एसपीसीए

1998 से काकातीया एसपीसीए हाउस नं. 11-27-10, एस.बी.एच. कोलोनी 4 वारंगल आंध्रप्रदेश भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से 12 सालों से गोवंश की रक्षा करने के लिए कार्य कर रही है.

कुर्बुल

कुर्बुल दूध उत्पादन करने के लिए अंगोल गोवंश के कारण ही आंध्रप्रदेश में बहुत ही आगे हैं.

श्रीकाकुलम

2000 से ग्रीन मर्सी प्लाट नं. 71, आर. के. नगर, एपीएचबी कोलोनी, कलेक्टरेट के पीछे, श्री काकुलम आंध्रप्रदेश 532001 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से 11 सालों से निरन्तर कार्य कर रही है.

तिरुपति

तिरुपति रामानुज संप्रदाय के द्वारा विश्व में भगवान श्री वि-णु का पूजन करने के कारण ही प्रसिद्ध है. भगवान श्री वि-णु तिरुपति में साक्षात हैं तथा प्रतिदिन भक्तों के प्रत्येक मनोरथ को पूरे करते हैं.

भक्त भगवान श्री वि-णु को अपने कामकाज में भागीदार बनाकर लाभ भगवान को समर्पित करते हैं.

वर्तमान मे बालाजी के भव्य मंदिर तिरुपति के समान ही पूरे विश्व में स्थापित किये गये हैं.

गोवंश के संवर्धन करने के लिए अपार धन के साथ में बहुत अच्छे प्रयत्न समर्पित भक्तों के द्वारा निरन्तर किये गये हैं.

तिरुपति में भगवान श्री वि-णु के द्वारा विवाह के अवसर पर कुबेर से धन कर्ज के रुप में लेने के कारण ही भक्तों के द्वारा कर्ज वापस करने के लिए अपना धन एवं सोना भगवान को देने के कारण विश्व का सबसे अधिक धन सम्पत्ति यहां पर मौजूद है.

तिरुपति में विश्व से प्रतिदिन हजारों की संख्या में भगवान श्री वि-णु के दर्शन करने के लिए भक्त आते हैं. भगवान के निःशुल्क दर्शन करने के लिए बहुत ही उत्तम व्यवस्था है. मनोरंजन करने के लिए एलसीडी टीवी की व्यवस्था भक्तों के लिए की गयी है.

भगवान श्री वि-णु के द्वारा पहाड़ पर विशाल भूमि पर सभी सुविधाओं के साथ में नगर बसाया गया है. नगर में गोवंश के संवर्धन करने के लिए विशे-ा प्रयत्न किये गये हैं.

बाहर से आने वाले भक्तों के लिए स्वयं की बसों की सुविधा है तथा रुकने के लिए सभी सुविधाओं से युक्त धर्मशालाएं हैं. भक्तों का स्वागत दर्शन के पूर्व ही प्रसाद के रुप में विभिन्न प्रकार के दूध दही से बने उत्तम व्यंजनों से किया जाता है.

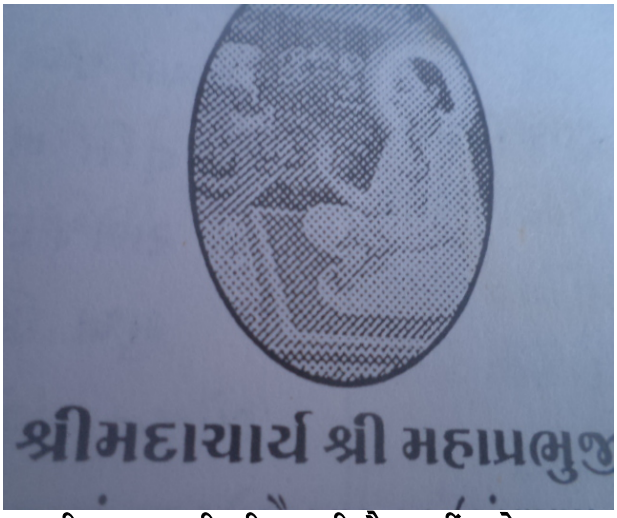

श्री महाप्रभु जी की 38 वी बैठक रींग रोड
शंकरमठ के पास में रानीगुंटा तीरुमाला दूरभा-ा
08772277317

महाप्रभुजी की यह बैठक दिव्य तथा अलौकिक प्रभाव वाली बैठक है. यहां पर वै-णवों के सभी मनोरथ अवश्य ही पूरे होते हैं. वातावरण मनोहर तथा पूर्ण शांतिमय है. वै-णव एक बार आने पर बार बार आने के लिए सोचने लगते हैं.

आचार्य श्री महाप्रभुजी यहां पर तीन बार पधारे हैं. तीनों बार अलग अलग कार्य किया है. काशी में अपने पिता के साथ में रहते थे. काशी में हर दिन मायावादी चर्चा करने के लिए आते थे. मायावादी को निरुत्तर कर भक्तिवाद की स्थापना करते थे.

जब आचार्य जी के पिता ब्राहमण भोजन करने बुलाते तब ब्राहमण आचार्य जी से वाद करते और आचार्य जी सबन के मायावाद को निराश कर भक्ति मार्ग की स्थापना करते थे. एक दिन आचार्य जी के मन में विचार आया कि दक्षिण चले तो ठीक है.

पहली बार अपने पिता के साथ आचार्य जी यहां पर आये थे. आचार्य जी से उनके पिता बहुत ही स्नेह

करते थे. आचार्य जी को देखे बिना चैन नहीं पड़ता था. आचार्य जी ने विचार किया कि पृथ्वी परिक्रमा कर सकल तीर्थ सनाथ करने हैं तथा दशो दिशाओं में दिग्विजय कर ब्रहमवाद को स्थापन करना है. स्वतंत्रता बिना यह कार्य न होगा. पिता अकेले परदेश जाने की आज्ञा नहीं देंगे. अब तो पिताजी स्वधाम पधारे तो अच्छा है.

एक दिन अपने पिता को कहा कि बालाजी होकर कांकरवाड चले. यह बात सुनकर पिताजी बहुत ही प्रसन्न हुए. बालाजी में अच्छा स्थान देखकर रुक गये. लक्ष्मणभटटजी स्नानकर इलमागारु एवं आचार्य जी को लेकर बालाजी के दर्शन करने गये.

आचार्य जी ने अपने पिता को सिंगार करने के लिए विनंती की. लक्ष्मण भटट जी जब सिंगार कर रहे थे तब बालाजी को उबासी आ गयी.

आचार्य जी के पिता श्रीलक्ष्मण भटट जी सदेह बालाजी में समा गये थे. आचार्य जी अपने पिता के वस्त्र लेकर अग्नि संस्कार कर मां को समझाते रहे कि पिता अक्षरब्रहम के स्वरुप थे सो अक्षरब्रहम में समा गये.

मां को कहा कि मामा के घर रामकृ-ण को लेकर विद्यानगर पधारे. मैं कुछ समय बाद आउंगा. अपने बड़े भाई केशवपुरी को कहा कि घर पधारे.

सूतक पूरा होने के बाद आप ब्रहमछोकर के नीचे आपने श्रीमद भागवत का पारायण प्रारम्भ किया. नित्य श्री लक्ष्मण बालाजी कथा सुनने आते थे. आचार्य जी उनको अपने पास आसन बिछाकर बिठाये. बालाजी ने कहा कि तुम्हारे मुख से कथा सुनने की बहुत ही इच्छा थी.

सप्ताह की समाप्ति के बाद में आचार्य जी मंदिर में सेवा सिंगार करने पधारे. आपने बालाजी से पूछा कि क्या आरोगने की इच्छा है? बालाजी ने कहा कि मनोहर के लडडूआ करवावो.

आचार्य जी ने 25 रु. सामग्री के पंडा को दिये. थार में सामग्री सजाकर पंडा ने आचार्य से विनंती की कि आप अपने हाथ से आरोगावो. तब बालाजी ने कही कि आप भी भोजन करने हमारे साथ पधारो. परस्पर भोजन कर बहुत आनन्द हुआ.

श्री महाप्रभु जी की बैठक तिरुपति मंदिर से बहुत ही पास में है. श्री महाप्रभुजी की बैठक में बाहर से आने वाले वै-णवों के लिए हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध है. श्री महाप्रभुजी के नित्य दर्शन करने एवं गोवंश संवर्धन करने सदैव ही उत्साह बना रहता है.

कामधेनु सेवा

2000 से श्री ए.वी. कृ-णाराव, राधा गोविंद गोरक्षा समिति 19-9-22/सी तीरुचानूर मार्ग तिरुपति आंध्रप्रदेश 517501 9247406983 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से विश्व के सबसे अधिक धनी भगवान के नगर में भगवान को सबसे अधिक प्रिय गोवंश के संरक्षण करने के लिए बहुत अधिक उत्साह के साथ में 11 सालों से संगठित प्रयत्न तथा गोवंश संवर्धन करने के लिए बहुत सारी गतिविधियां बहुत ही उर्जा के साथ कार्य कर रही है.

हरी घांस उत्पन्न करने के लिए ध्यान दिया जा रहा है. गोवंश की नस्ल को सुधारने के लिए नंदी तैयार करने का कार्य चल रहा है.

गोमूत्र को प्रातःकाल ब्रहम मूहर्त में एकत्र करने के लिए अनुसंधान कार्य किया जा रहा है. काली बछिया के मूत्र पर बहुत अधिक बल दिया गया है. असाध्य रोगों को पूरी तरह से सही करने के लिए वैद्य की भी नियुक्ति की गयी है.

पंचगव्य के कारण ही सुरक्षा कवच संभव है. गोमय से गोबर गैस उत्पन्न कर सीएनजी तैयार करने का प्रयत्न किया जा रहा है. पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए भी प्रयत्न चल रहा है. जैविक खेती करने के लिए जैविक खाद तैयार करने का कार्य किया जा रहा है.

अनन्तपुर

अनन्तपुर दूध उत्पादन करने के लिए सक्रिय है तथा अंगोल के विकास करने के लिए कार्य किया गया है.

कामधेनु परिवार

2006 से विश्व शांति एनिमल वेलफेयर ओरगेनाइजेशन नं. 3/12, बीसी कोलोनी डाकघर लेपाक्षी अनन्तपुर आंध्रप्रदेश 515331 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के द्वारा पंजीकृत होकर तथा उनसे वित्तीय सहयोग से 5 साल से गोवंश संरक्षण संवर्धन करने के लिए कार्य कर रही है.

कल्याणदुर्ग

कामधेनु परिवार

2006 से श्री नागेन्द्र कुमार बुद्ध वेलफेयर सोसायटी फोर एनिमल्स एंड बर्डस नं. 9-डी/37, रेव्यन्यु कोलोनी कल्याणदुर्ग जिला अनन्तपुर आंध्रप्रदेश 515761 944138819 भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के द्वारा पंजीकृत होकर तथा उनसे वित्तीय सहयोग से 6 साल से अहिंसा के लिए कार्य कर रही है.

पुटुपती

करुणा सोसायटी

श्री नरेन्द्र रेडडी एवं श्रीमती कलैमेटाइन मोबाइल 9440985243, 9490360218 करुणा सोसायटी पुटपर्थी अहिंसा एवं करुणा के लिए सक्रिय हैं.

पूरे विश्व से पुटुपती कई सालों से युग पुरु-ा श्री सत्य साई के दर्शन करने के लिए करोड़ों भक्त आ रहे हैं. पुटुपती में भक्त भावविभोर हो रहे हैं.

2011 में उनके अंतिम दर्शन करने के लिए अपार भीड़ कई दिनों तक थी. पुटुपती वर्तमान में अपनी आध्यात्मिक उर्जा के लिए विश्व में प्रसिद्ध है.

87 साल के जीवन में सत्य साई ने गांव गांव में गोवंश के विकास पर ध्यान देकर आम व्यक्ति की अपनी दैनिक आवश्यकता के लिए आवश्यक जल, औ-धि, अनाज के लिए बहुत ही अच्छी तरह से कार्य किया गया है.

स्वर्गीय श्री सत्य साई बाबा के द्वारा 166 देशों में अपनी आध्यात्मिक ताकत के बल पर गोवंश के विकास करने के लिए अदभुत संदेश करोड़ों भक्तों को दिया गया है. भक्तों को विश्वास है कि गोवंश के माध्यम से देवत्व की नीव रखी जायेगी.

वर्तमान सरकार उनके कार्य से प्रभावित होकर उन्हें भरपूर सहयोग देने के लिए बाध्य हो गयी है. उनके नये अवतार के द्वारा भारतीय गोवंश के विकास करने के लिए कार्य किया जायेगा तथा भारत को आध्यात्मिक गुरु के रुप में फिर से विश्व में सामने लाया जायेगा. यहां पर गोवंश के विकास करने के लिए अपार धन एकत्र कर बहुत ही लंबे समय से कार्य किया गया है.